बैंगन के प्रमुख हानिकारक कीट एवं उनका समन्वित प्रबंधन

कृषि कुंभ (नवंबर, 2022), खण्ड 02 भाग 06, पृष्ठ संख्या 53–54

बैंगन के प्रमुख हानिकारक कीट एवं उनका समन्वित प्रबंधन

कमल यादव[1], धर्मपाल यादव[1], राजेश कुमार[1], विपुल शर्मा[1], विवेक गर्ग[1], डॉ. ए.के. चौधरी[2] एवं डॉ. प्रदीप कुमार[2]

(शोध छात्र)[1]

[2]कीट विज्ञान विभाग, कृषि विज्ञान संस्थान बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय,झाँसी (उ.प्र.) उत्तर प्रदेश, भारत।

बैंगन भारत वर्ष के साथ साथ दुनिया भर में खायी जाने वाली सब्जियों में से एक है बैंगन की खेती भारत में प्राचीन समय से होती आ रही है बैंगन की खेती ठन्डे प्रदेशो को छोड़कर भारत के सभी भागो में की जाती है बैंगन को एग प्लांट के नाम से भी जाना जाता है क्योकि देखने में यह अंडे के आकार जैसा होता है

भारत 28 प्रतिशत बैंगन का उत्पादन करता है बाकि का 15 प्रतिशत उत्पादन विश्व भर में होता है बैंगन भारत के साथ विश्व में खाये जाने वाली नामी सब्जियों में से एक है इसे पूरे वर्ष उगाया जा सकता है औषधिय गुण होने के कारण बैंगन को डायबिटीज जैसी बीमारियों में उपयोग किया जाता है बैंगन में पाए जाने वाले एंटी ऑक्सीडेंट तत्वों के कारण शरीर का इम्युनिटी सिस्टम बढ़ता है एवं शरीर स्वस्थ रहता है

बैंगन में लगने वाले मुख्य हानिकारक कीट

फल एवं तना छेदक कीटः

इसके प्रौढ़ मध्याकार एवं सफेद रंग के होते है जिनके वक्ष के ऊपरी भाग पर पीले और काले रंग के धब्बे पाये जाते है पंख सफेद तथा उन पर भूरे रंग के धब्बे होते है तथा पंख विस्तार 20–22 मि.मी. होता है मादा कीट अंडे एक एक करके अथवा 2–4 के समूह में प्राय पतियों की निचली सतह पर देती है अंडे कोमल

तनो, फूलो, कलियों तथा फल के बाह्यदल में भी देती है इनके अंडे लम्बे सफेद क्रीम की तरह होते

है मादा अपने जीवन काल में क्रीम की तरह होते है मादा अपने जीवन काल में 100–150 तक अंडे देती है प्रारम्भ में सूंडी सफेद रंग की होती है जो बाद में सफेद पीले रंग में बदल जाती है तथा उसके शरीर पर बैंगनी रंग की धारिया होती है पूर्ण विकसित सूंडी 18–23 मि. मी. लम्बी होती है।

सफेद मक्खी कीटः–

इनका अंडा 0.3 मि.मी.लम्बा चमकदार एवं आकार में अंडाकार तथा

पीले रंग का होता है इसके वयस्क छोटे लगभग 2.5 मि.मी.लम्बा तथा लगभग 1 मि.मी.मोटे और पीले सफेद रंग के होते है इसके निम्फ चमकदार अंडाकार तथा पीले रंग के 0.31मि.मी. लम्बे होते है इसका कर्मिकोष चपटा अंडाकार तथा सिलेटी रंग का एवं कर्मिकोष आकार में निम्फ से बड़ा होता है।

एपिलेछुआ बीटल्स :–

यह कीट ज्यादातर बैंगन में वृद्धि करते हुए पोधो की नई और कोमल पतियों पर आक्रमण करते है जिससे पोधो का विकास रुक जाता है ।

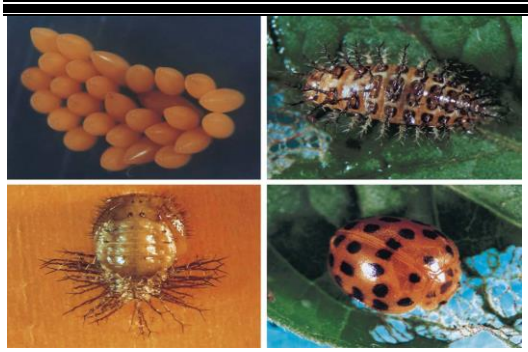

चित्तीदार या हाड्डा भृंग कीटः–

इसका वयस्क ताँबे के रंग पंखो तथा पीले रंग से घिरे होते है इस कीट के अंडे की अवधि 2–4 दिन की होती है इसके अंडे रंग में पीले एवं पत्ती की निचली सतह पर गुच्छो में पाये जाते है मादा अपने जीवनकाल में लगभग 120–460 अंडे देती है इसकी लारवा अवस्था 10–35 दिन की होती है एवं प्यूपा की अवस्था 5–6 दिन की होती है इस कीट का जीवन काल लगभग 25–50 दिन का होता है तथा एक वर्ष में इसकी 6–7 पीढ़ियाँ पायी जाती है

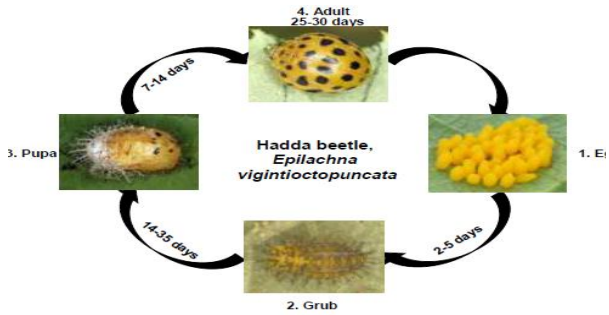

समन्वित या एकीकृत कीट नियंत्रण के उपाय

कर्षण क्रिया द्वारा नियंत्रण

गर्मियों के समय में जब खेत खाली रहते है जब गहरी जुताई करके मृदा में उपस्थित कीटो की विभिन्न अवस्थाओ को नस्ट किया जा सकता है कुछ कीट फसलों के अवशेषो तथा खरपतवारो पर पाये जाते है अतः उनको नष्ट करके उन पर उपस्थित कीटो का नियंत्रण किया जा सकता है फसल चक्र को अपनाकर फसल विशेष पर लगने वाले कीटो का नियंत्रण किया जा सकता है कीट प्रतिरोधी किस्मो का प्रयोग करके जैसे अन्नामलाई किस्म एफिड रोधी किस्म होती है।

फसल की बुवाई के समय में परिवर्तन करके भी फसल को कीटो के आकर्मण से बचाया जा सकता है कीटो से प्रभावित या ग्रसित भागो को जैसे फल, पत्तियों, टहनियों को काटकर नष्ट कर देना चाहिये या जला देना चाहिये।

यांत्रिक नियंत्रण

कुछ कीट जो आकार में बड़े होते है जैसे ग्रास हॉपर आदि को हाथ से पकड़कर नष्ट किया जा सकता है तथा फल बेधक तना बेधक को भी पकड़कर नष्ट करना चाहिए यांत्रिक ट्रैप जैसे लाइट ट्रैप पीला स्टिकी ट्रैप के द्वारा एफिड और फल छेदक कीटो का नियंत्रण कर सकते है पलवार अथवा मल्च का उपयोग करके भी कीटो का नियंत्रण किया जा सकता है।

जैविक नियंत्रण

इसके अंतर्गत ट्राईकोग्रामा चीलोनिस के 10 से 15 लाख परजीवीयों का प्रयोग प्रति हैक्टेयर करके फल एवं तना बेधक का नियंत्रण किया जाता है।

रासायनिक नियंत्रण

एपिलेकना बीटल के नियंत्रण हेतु कार्बोरिल का 0.1 प्रतिशत छिड़काव, साइपरमैथरीन 0.0125 प्रतिशत का प्रयोग तना व फल भेदक के नियंत्रण हेतु करते है चित्तीदार भृंग कीट के नियंत्रण के लिए क्लोरपाइरीफोस 1.0 एस.एल. का फसल पर छिड़काव करे सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए ऐसिटामेप्रिड का प्रयोग किया जाता है हाड्डा बीटल के नियंत्रण हेतु 0.5 प्रतिशत क्यूनालफॉस का प्रयोग करना चाहिए।